Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# सात गीत-वर्ष

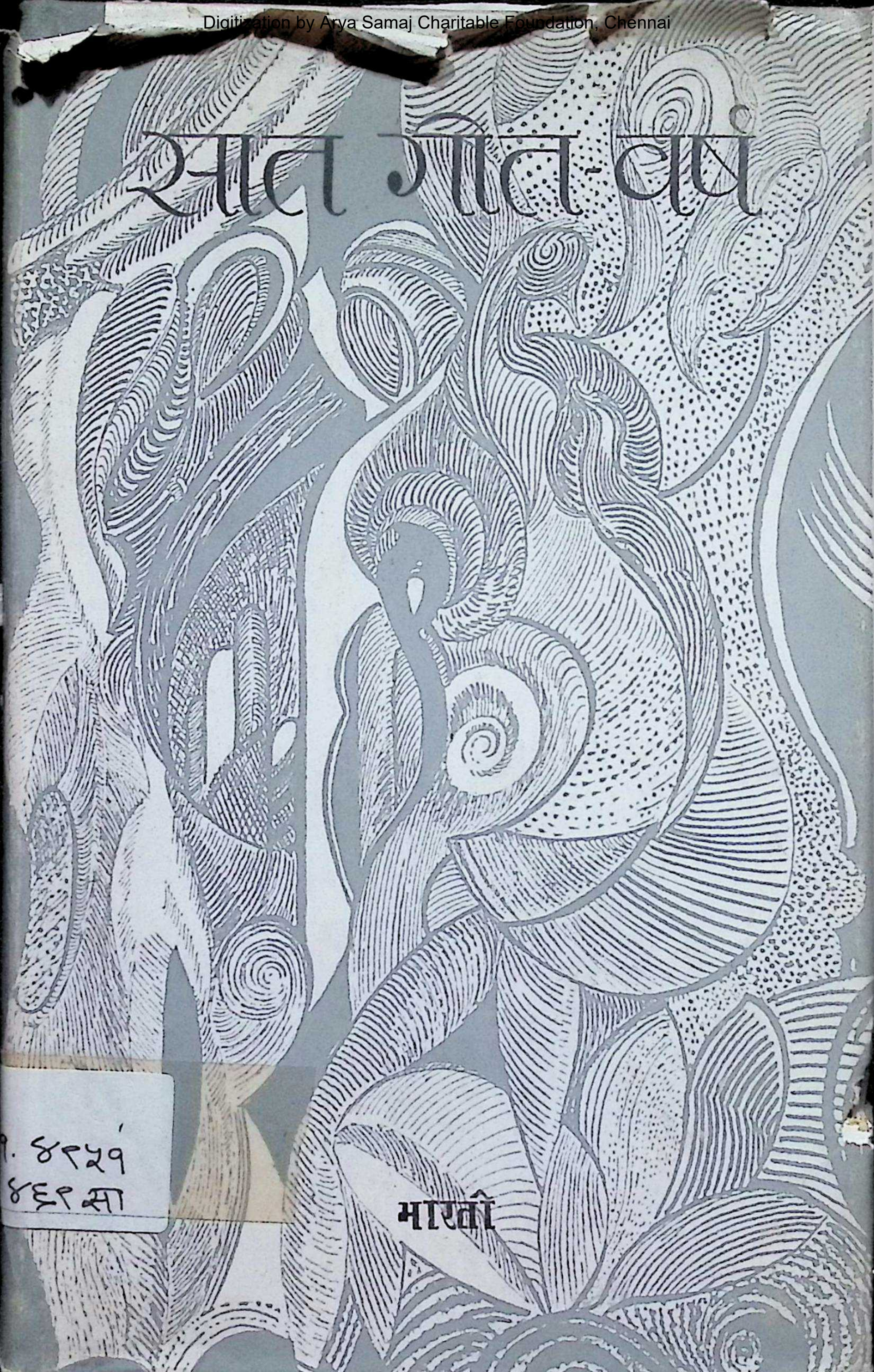

१. ४१२५१
४६१सा

भारती

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'दूसरा सप्तक'में भारतीका हस्ताक्षर व्यापक चर्चाका विषय बना। 'ठण्डा लोहा'ने उनकी ओर उन सभी पाठकों-का ध्यान बरबस आकर्षित किया जो काव्यमें रुचि लेते हैं, भले ही आस्थाएँ और मान्यताएँ उनकी जो भी हों। फिर 'अन्धा युग' प्रकाशित हुआ जिसके द्वारा भारतीकी काव्य-प्रतिभाने नयी काव्य-शैलीको एक उच्चतर धरातलपर प्रतिष्ठित किया।

326

इधर कभीसे भारतीका पाठकवर्ग उत्सुक और व्यग्र प्रतीक्षामें था कि उनका नया काव्य-संकलन सामने आये। और, 'कनुप्रिया'के प्रायः साथ ही भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा यह 'सात गीत वर्ष' प्रस्तुत किया गया। 'सात गीत वर्ष'में उनकी नवीनतम रचनाएँ संगृहीत हैं, और अनेकमें-से कुछ ही, विशेषमें-से सविशेष। ये रचनाएँ भारतीके कविसे तो साक्षात्कार करायेंगी ही, हिन्दी काव्य-विकासके एक चरण और नयी कविताके एक स्पर्शी-प्रौढ़ स्वरूपका भी सम्यक् परिचय देंगी।

रचनाओंके अतिरिक्त, संकलनकी प्रस्तावना भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है। रचना-प्रक्रियाका यह सुन्दर स्पष्टीकरण सामान्य पाठकोंको सहायक सिद्ध होगा और जिज्ञासुओं तथा विद्यार्थियोंको अपने बहुत कामका। प्रथम संस्करण हाथोंहाथ गया, यह द्वितीय प्रस्तुत है।

मूल्य ३.५० न.पै.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

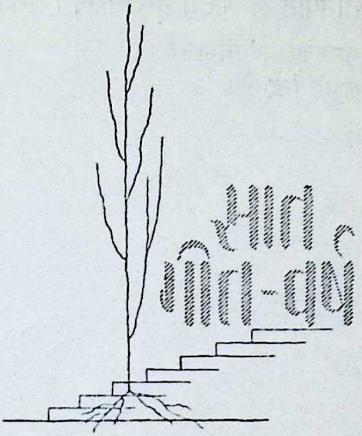

# सात गीत-वर्ष

धर्मवीर भारती

भारतीय राजदूतावास
उपहार
काठमाडौं

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक—९१
सम्पादक एवं नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

9565

SAAT-GEET VARSHA
(Poems)
Dr. DHARMAVEER BHARATI
Bharatiya Jnanpith Publication
Second Edition 1964
Price Rs. 3/50

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६
द्वितीय संस्करण १९६४
मूल्य तीन रुपये पचास नये पैसे

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी—५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| प्रमथ्यु गाथा | .... | १५ |
| नया रस | .... | २५ |
| नवम्बर की दोपहर | .... | २७ |
| फागुन के दिन की एक अनुभूति | .... | २९ |
| उत्तर नहीं हूँ | .... | ३० |
| जिज्ञासा | .... | ३२ |
| संक्रान्ति | .... | ३५ |
| पराजित पीढ़ी का गीत | .... | ३६ |
| कौन चरण ? | .... | ३९ |
| इनका अर्थ | .... | ४३ |
| गैरिक वाणी | .... | ४६ |
| केवल तन का रिश्ता | .... | ४८ |
| मेघ-दुपहरी | .... | ५० |
| प्लेटफ़ॉर्म | .... | ५२ |
| इतने दिन बाद | .... | ५३ |
| क़स्बे की शाम | .... | ५४ |
| धूल-भरी आँधी का गीत | .... | ५६ |
| आँगन | .... | ५८ |
| अवशिष्ट | .... | ५९ |
| उपलब्धि | .... | ६० |
| स्वयम् को दुहरायेगा ? | .... | ६१ |
| साबुन आइने | .... | ६२ |
| रात अँधियारी : हवा तेज़ | .... | ६४ |
| आस्था | .... | ६६ |
| निर्माण-योजना | .... | ६७ |
| ग़ुलाम बनानेवाले | .... | ७१ |
| एक वाक्य | .... | ७३ |

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

| | | |
|---|---|---|
| बाणभट्ट | .... | ७४ |
| बृहन्नला | .... | ७६ |
| टूटा पहिया | .... | ७९ |
| एक अवतार में | .... | ८१ |
| दान : प्रभु के नाम | .... | ८३ |
| अर्द्धस्वप्न का नृत्य | .... | ८५ |
| बातें | .... | ८८ |
| साँझ के बादल | .... | ९० |
| यह ढलता दिन | .... | ९२ |
| धुँधली नदी में | .... | ९४ |
| शाम : दो मनःस्थितियाँ | .... | ९६ |
| अँधेरे का फूल | .... | ९९ |
| यादों का बदन | .... | १०० |
| आँगन बेली | .... | १०१ |
| ढीठ चाँदनी | .... | १०२ |
| दिन ढले की बारिश | .... | १०४ |
| शाम : एक थकी लड़की | .... | १०६ |
| अन्तहीन यात्री | ... | १०८ |
| एक छवि | .... | ११० |
| चैत का एक दिन | .... | ११२ |
| फूल, सागर, सीपी | .... | ११४ |
| दूसरे दिन सुबह | .... | ११६ |
| अँजुरी भर धूप | .... | ११८ |
| घाटी का बादल | .... | १२० |

*तथा रचना-प्रक्रिया पर कुछ शब्द : पृ० ५*

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# क्षण,

काव्य सृजनका,

सच है कि सबसे महत्त्वपूर्ण विन्दु है – लेकिन शायद वही है जिसके बारेमें स्वयं रचनाकार भी कठिनतासे ही कुछ निश्चयपूर्वक कह सकता है। वैसे तो मनपर उस क्षणका स्वाद बहुत तीखा छूट जाता है लेकिन जब उसे प्रकट करनेकी चेष्टा करो तो लगता है कि यह तो न मालूम कितने जाने-अनजाने स्वादोंका सम्मिलित स्वाद है जिसके संवेदनको ठीक-ठीक व्यक्त कर पाना असम्भव-सा ही है। एक हिचक मनमें और होती है कि जो कुछ कहने-सुनने लायक़ था वह तो एक-एक बूँद काव्यकृतिमें उँड़ेलकर वह क्षण रीत गया, अब अपनी याददाश्तमें उसे फिरसे सम्पुंजित करनेकी चेष्टा भी करें तो ऐसा न हो कि उसका आस-पास, परिस्थिति, समय, स्थान और आसंग तो वापस खोजे जा सकें – मगर उसका मर्म, उसका सारतत्त्व छूट ही जाये।

कई बार समकालीन लेखनमें भी रचना-प्रक्रियाके ऐसे सांगोपांग विवरण देखनेको मिले हैं; पर उन्हें देखकर बहुधा यही भावना हुई है कि वे अजायबघरमें रखे हुए जलपाखी हैं, खालमढ़े मृतरूप जिनमें रूप-रंग, आकार, पंजे, पंख सब जुटा दिये गये हैं किन्तु ग़ायब है तो केवल उसकी उड़ान – पूर्णिमाकी रातको चन्द्रमा और समुद्रके बीच उसकी आकुल आवेश-भरी उड़ान; और ग़ायब है उसकी अजीब-सी चीत्कार – भय, वेदना, उल्लास, उन्मत्त वासना, विजय और आशंकासे भरी हुई। अजायबघरका पाखी दूसरे दिन सुबह बालूपर छूट गया उसका अवशेष है – जल-पाखी नहीं।

एक ओर यह दुस्तर कार्य और दूसरी ओर यह मेरा अजीब-सा मन जिसे उन्मुख करो पूरबकी ओर तो भागेगा धुर पश्चिमकी ओर। नियोजित करो अपने काव्य-सृजनके क्षणोंको पुनः स्मरण करनेको, तो अदबदा कर उसे वे क्षण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

याद आयेंगे जो मनपर जाने कब अपनी छाप छोड़ गये हैं लेकिन काव्य-सृजनसे उनका दूरका लगाव भी नहीं है। विन्ध्यकी एक पहाड़ी नदीमें अँधेरेका स्नान, अपने पुराने घरके उखड़े पलस्तरवाली एक दीवारपर कल्पित बेडौल शक्लें, कोणार्कके रास्तेमें फरदके लाल उत्तप्त नोकीले फूल, बीमार पत्नीका मुरझाया चेहरा, तैरते हुए मछलियोंके झुण्ड और यह, और वह, और तमाम सब, लेकिन सब परस्पर असम्बद्ध, और रचनाके क्षणसे जिनका कोई दूरका सूत्र भी नहीं जुड़ता।

लेकिन इन सबोंके बीच रह-रहकर मन एक स्मृति-चित्रपर बार-बार जा टिकता है, बहुत पुराना, लेकिन अब भी बिलकुल ताज़ा····

····कच्ची नींदसे मुझे जगा दिया गया है और ले जाया जा रहा है घनघोर अँधेरेमें गाँवके बाहर ऊबड़-खाबड़ रास्ते-पर-से, खेत, टीलों, पोखरोंके बीचसे, मीलों दूर, नहर-वाली अमराईमें जहाँ देवकालिनका मन्दिर है। दीवालीकी छुट्टियाँ मनाने बहनके घर आया हूँ, इस छोटे-से धूल-भरे उदास टूटे-फूटे पुराने क़स्बेमें जहाँ सूरज डूबते ही रात हो जाती है, सड़कें वीरान हो जाती हैं। मगर आज रात-भर अँधेरेमें पगध्वनियाँ सुनाई देंगी क्योंकि आज आधीरात देवीकी पूजा होती है और पीरके चबूतरेपर चादर चढ़ती है – उन पगध्वनियोंमें एक नन्हीं किशोर पगध्वनि मेरी भी है लेकिन डगमग, क्योंकि मेरी आँखोंमें अब भी नींद है और अधनींदा चल रहा हूँ और घरवाले मेरा हाथ पकड़े हैं। अच्छी तरह याद हैं मुझे वे क्षण। अध-नींदमें मुझे सामने कुछ नहीं दीखता सिवा टॉर्चसे गिरा एक उजालेका गोल टुकड़ा जिसके पीछे मैं, और स्थिर है वह उजालेका वृत्त और स्थिर हूँ मैं – चल रही है केवल वह पगडण्डी, कंकड़, पत्थर, मेड़, खेतपर-से सरकती आती

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुई, उस उजले वृत्तमें-से टेढ़े-मेढ़े बल खाती हुई, मेरे पाँवोंके नीचे विलुप्त होती हुई। खड़ा हूँ मैं – स्थिर, नींद डूबा और अँधेरेमें चल रही हैं खुशबुएँ कुछ जानी कुछ अनजानी – अभी नम पोखरकी सर्द खुशबू, अभी अँधेरेमें सूखते उपलोंकी, अभी कटी हुई कुट्टीकी, अभी वनतुलसाकी, अभी जंगली कबूतरोंके राखरँगे पंखोंकी··· मानो मैं स्थिर खड़ा हूँ और रास्ता और उसका परिपार्श्व अलसाता आता हुआ मुझमें-से गुज़रता जाता है।

····कब रास्ता खत्म हुआ, कब अँधेरा फट गया, कब अकस्मात् शून्यमें-से एक जगमग दृश्य प्रकट हो गया मेरे सामने – यह याद नहीं। सामने है मन्दिर, चबूतरा; गैसके हण्डे, शहनाइयाँ, झाँझ, हारमोनियम, क़व्वाली, अगरबत्तियाँ, आते हुए लोग, जाते हुए लोग, पुकारते हुए लोग, बोलते हुए लोग।

अब जाग गया हूँ मैं, जी रहा हूँ, सक्रिय हूँ। सब चीज़ें अपनी जगह स्थिर हैं, यहाँतक कि बेहद शोरवाली भीड़ भी केतलीमें खलभलाते जलकी तरह चंचल मगर अपनी परिधिमें स्थिर है। चल रहा हूँ केवल मैं। एक जगह गुमसुम खड़ा मैं आ रहा हूँ, जा रहा हूँ, इसमें-से उसमें-से – इसके बग़लसे, उसके पाससे····नहरकी पुलियाके पास गुमसुम खड़ा मैं।

काफ़ी देर हो चुकी है। घरवाले सुबह तक यहीं जागरण करेंगे। मुश्किलसे इजाज़त मिली है घर लौटनेकी अकेले। मैं मुड़ा – रोशनीका जगमगाता द्वीप पीछे मुड़ गया – सामने है अँधेरेका विशाल समुद्र अथाह दूर तक फैला हुआ।

दृश्यान्तर। लौट रहा हूँ जहाँसे आया था वहीं। सब कुछ वही है पर इतनी ही देरमें कुछ भी तो वही नहीं। कहाँ हैं वे जो मेरे साथ थे। कहाँ है प्रकाशवृत्तके पीछे मेरी स्थिरता। हाथोंमें टॉर्चकी रोशनी है लेकिन अथाह अँधेरेमें क्षुद्र, असहाय, अनिश्चयग्रस्त, धुँधली, सहमी हुई, पथके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हर रोड़ेसे टकराकर टूटती हुई, हर झाड़ीमें उलझकर तार-तार होती हुई....

और पहली बार तो नहीं थे, इस बार कहाँसे आ गये ये कटे पेड़ोंके ठूँठ, प्रेत, झाड़ियोंमें छिपी अजाने भयकी चमकती आदमख़ोर आँखें, पोखरोंके अन्धे जलोंपर तैरती गूँगी छायाएँ....और मेरा गला सूखने लगा, कब पाँवोंमें-से ताक़त जाने-सी लगी, मैं नहीं जानता।.... और पहली बार, पहली बार मेरे उस किशोर मनको लगा कि मैं अथाह शून्य-के समक्ष खड़ा हूँ। मृत्यु नहीं, आपदा नहीं, – शून्य।

पीछे मुड़कर देखा मन्दिर और रोशनी और भीड़-भाड़ अँधेरेमें विलीन हो चुके थे। लगता था कि विशाल जलयान टूट गया और डूब गये लोग और अब मैं पुकारूँ भी तो कोई बचाने नहीं आयेगा।

और सामने देखा और याद करनेकी कोशिश की पुराना क़स्बा और धीमी लालटेनमें बच्चोंको सुलाकर जागती हुई बहनका ममता-भरा चेहरा – पर वह भी उस अँधेरेमें नहीं दीखा, नहीं दीखा। वह ऐसा भविष्य लगा जो बीत गया अब कितना भी चलूँ वापस नहीं मिलेगा।

कितना अजीब अकेलापन – राह है, क़दम हैं, घर है लेकिन कुछ भी नहीं। एक विराट् अनस्तित्व। अँधेरा, अनिश्चय, विराट्, अथाह और उसके समक्ष मैं – निहत्था – अपने अतीत और भविष्यसे भी वंचित। जहाँ पहुँचा था वहाँसे चला हूँ, जहाँसे चला था वहाँ जा रहा हूँ पर जहाँ पहुँचा था वह डूब चुका है और जहाँ जाना है वह पता नहीं अँधेरेके पार है भी या नहीं।

एक विराट् अनस्तित्व, शून्य, अन्धकार ..

शायद यह यात्रा हम जीवन-भर करते रहते हैं और कितनी बार, कितनी बार, यह अनस्तित्व, यह शून्य हमको जीने लगता है, और हम पाते हैं कि हमारा समस्त आस-पास उजाला, भीड़-भाड़, विज्ञान, दर्शन, अकस्मात् अनस्तित्व-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



में लीन हो गया है। है, लेकिन नहीं है। अँधेरेमें हैं हम – अकेले, निहत्थे, असहाय! या शायद हम भी नहीं सिर्फ़ प्रगाढ़ अन्धकारमें निहत्थे हाथोंकी टटोल, खोज.... लेकिन फिर हम पाते हैं कि हम बच गये हैं....। होता क्या है कहना कठिन है। बाहर सिर्फ़ इतना होता है कि यन्त्र-चालित गतिसे क़दम उठते जाते हैं। इस दौरानमें अन्दर क्या घटित होता है इसका अनुमान करना कठिन है।

....शायद होता यह है कि हमारे अतीत और भविष्य-का जगत् दोनों अकस्मात् मिथ्या पड़ जाते हैं। बीचमें बच जाते हैं हम; वर्त्तमान क्षणके नटपत्रपर; और ताकि हम जीते रहें – संसारको पुनः उत्पन्न होना पड़ता है भयमें-से, यातना-में-से, शून्यमें-से।....

... या शायद संसार यथावत् रहता है केवल अतीत और भविष्यसे पूर्णतः विच्छिन्न होकर हम अपने अन्दर कहीं मृत हो जाते हैं और उस क्षणमें फिर हम अपनेको रचते हैं और फिर सबको नये सिरेसे धारण करते हैं।

...या शायद न संसार नष्ट होता है न हम। केवल हमारी पुरानी जगत्-चेतना अकस्मात् बिलकुल शून्य पड़ जाती है – अतीत और भविष्यके प्रति, बाह्य और अन्तरके प्रति हमारे सारे अद्यावधि स्थापति सम्बन्ध अकस्मात् टूट जाते हैं और हम फिर नितान्त शून्यमें-से उबरकर उन सम्बन्ध-सूत्रोंको नये स्तरपर जोड़ते हैं और अपने नव-रचित सम्बन्धोंके वर्त्तमानके आधारपर हम अपने अतीत और भविष्यकी नित नूतन उपलब्धि करते हैं।

... शायद....

हाँ यह 'शायद' बहुत महत्त्वपूर्ण है। शायद इनमें-से कोई एक प्रक्रिया घटित होती है, या शायद सब होती है, या शायद कोई नहीं होती। होता है कुछ और....

....शायद हम भी रहते हैं और संसार भी। नष्ट कुछ नहीं होता। जहाँसे हम चलते हैं वह भी और जहाँतक हम पहुँचते हैं वह भी। हम दोनोंको जी चुके होते हैं,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपनेमें धारण किये हुए होते हैं लेकिन अकस्मात् किसी एक क्षणमें हम पाते हैं कि यह सब है तो पर अकस्मात् हमारे लिए अर्थहीन हो गया है, अनिश्चित हो गया है। और हम विराट् शून्यमें अकेले छूटते जा रहे हैं और हम अकेले छूटना नही चाहते। जीना चाहते हैं और अनस्तित्वमें-से अस्तित्व पानेके लिए अभिव्यक्त करना चाहते हैं अपनेको, और बिना संसारके हम अपनेको अभिव्यक्त कैसे करेंगे, अतः हम किसी एक स्तरपर मूल्य और अर्थ देते हैं हर चीज़को और हर चीज़के माध्यमसे अपनेको। पाये हुए और पाकर खोये हुए संसारको किसी एक स्तरपर 'रचते' हैं। ऐसे स्तरपर जहाँ कुछ भी फिर कभी धुँधला और अर्थहीन न पड़े।

जीवनमें जिये हुए अनुभवों, संवेदनों, पीड़ाओं और सुखोंमें तथा काव्यमें रचे हुए पीड़ाओं, सुखों और संवेदनों-वाले जीवनमें शायद यही सम्बन्ध है और यही अन्तररेखा। अपनी चरम निजी अनुभूति और व्यापक संसार, क्षण और निरवधि कालके बीच अँधेरी राहपर कहीं एक भूमि है जहाँ शून्यको पराजित कर हम 'रचते' हैं स्थायित्व देनेके लिए और सार्थकता पानेके लिए। जो पाकर खोया जा सकता है उसे रचनेके ऐसे बिन्दुपर उपलब्ध करनेके लिए जहाँसे वह फिर खोया न जाये।

क्या ऐसा है कि समूची जीवन-प्रक्रिया अलग चलती रहती है और रचना-प्रक्रियाका यह घनीभूत क्षण अकस्मात् कभी रहस्यमय ढंगसे अकारण आ जाता है। शायद नहीं। कितने ही क्षण हैं, कितनी स्थितियाँ हैं जो प्रत्यक्षतः असम्बद्ध लगती हैं पर कुल मिलाकर हमारे चेतन या अर्द्धचेतन मनमें लहरपर लहर इस एक बिन्दुको उभारती रहती है। ( क्या इसीलिए, जैसा मैंने प्रारम्भमें कहा, किसी एक क्षणको याद करनेके बजाय मेरा मन जाने कहाँ-कहाँ भटक जाता है। ) जब समूची जीवन-प्रक्रिया किसी-न-किसी रूपमें रचनाके क्षणसे सम्बद्ध होती है तो वे लोग जो अकसर आरोप लगाते हैं कि अमुक कविता है तो मर्मस्पर्शी लेकिन जीवनसे दूर है, वे कविताके बारेमें क्या और कितना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जानते हैं यह कहना कठिन है। जो खरा काव्य है उसकी रचना-प्रक्रियामें, कितने ही अप्रत्यक्ष रूपमें हो, किन्तु जीवन-प्रक्रिया अनिवार्यतः उलझी रहती है।

कितनी विभिन्न स्थितियोंमें-से, हम इस जीवनको उपलब्ध करते हैं। अधिकतर तो यह लगता है कि हम जी नहीं रहे हैं, जिये जा रहे हैं। कभी उस नींद-डूबी यात्रीकी तरह खुद चलते हुए भी अहसास स्थिरताका होता है और लगता यह है कि हम ठहरे हैं पर बाक़ी सब हममें-से गुज़रता जा रहा है। कभी खुद पुलियाके पास चुपचाप खड़े रहते हैं पर अहसास यह होता है कि बेशुमार भीड़में-से हम हरेकमें-से आ रहे हैं, जा रहे हैं। कभी अपनेमें 'सर्व'-का, 'प्रत्येक'का साक्षात्कार करना और कभी 'सर्व' में, 'प्रत्येक' में, अपना। ये सब जाने कितनी स्थितियाँ हैं जो रचनाके क्षणोंमें सार्थक होती हैं। वह एक बिन्दु है जिसमें-से सब संसरण करता है, पुनः रचे जानेके लिए।

और यह प्रक्रिया केवल कुछ चुने हुए अत्यन्त सुविधापूर्ण क्षणोंमें ही नहीं घटित होती। रोज़मर्राकी ज़िन्दगीके तथाकथित अत्यन्त गद्यात्मक नीरस काम, दफ़्तर, बाज़ार, सौदा-सुलुफ़, हारी-बीमारी, रोज़गारके बीच भी रचनाकारका मन अनजाने चुपचाप काव्य-सृजनकी भूमिका प्रस्तुत करता रह सकता है। इसीलिए जाने कितने रूपोंमें कितने प्रकारसे जीवन तथा बाह्य परिवेश काव्य-कृतिमें समाविष्ट होता चलता है। यही कारण है कि खरी काव्य-कृतिका मुख्य गुण है सजीवता, अनायास सजीवता। और यही कारण है कि जब सहज रचना-प्रक्रियामें व्यवधान उत्पन्न कर प्रयासपूर्वक जीवन या जीवनकी ऐसी व्याख्याएँ काव्यपर ज़बरदस्ती आरोपित करनेकी चेष्टा की जाती है, जो रचनाके अपने आन्तरिक सृजन-विकाससे उद्भूत नहीं हैं, तो वे निश्चित रूपसे काव्यको निर्जीव ही बनाती हैं। जब भी काव्यमें 'दृष्टि' उभरी है तो तभी जब रचनाकारके मनमें दोनों ही स्तर स्वतः सजीव और सक्रिय रहे हैं, दोनों ही एक-दूसरेको अनुप्राणित भी करते चले हैं और अनुशासित भी, कभी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विरोधी स्थितियोंमें कभी समानान्तर स्थितियोंमें, कभी पूरक स्थितियोंमें।

निःसन्देह रचनाकारके मनकी यह स्थिति काफ़ी जटिल होती है। इस जटिल स्थितिको समझने या जी सकनेमें जो असमर्थ होते हैं वे अकसर इसे सरल करनेकी कोशिश करते हैं – इनमें-से किसी एक स्तरको काटकर। सरलताकी ओर अकाव्यात्मक पलायनका एक रूप वह होता है जब रचना-प्रक्रियाकी अनिवार्य प्रकृतिगत माँगोंकी उपेक्षा कर जीवनकी किसी एक संकीर्ण परिधिको ही सब कुछ सौंप दिया जाता है और कविकर्म केवल निर्देशित विषय ( शास्त्र-द्वारा, धर्म-द्वारा, राजसत्ता-द्वारा ) नीति, आदेश, योजना, फ़तवोंके पद्यान्तरण तक सीमित हो जाता है। ऐसे काव्यका खोखलापन जाहिर होते देर नहीं लगती। सरलताकी ओर दूसरा अकाव्यात्मक पलायन है उनका जो समूची जीवन-प्रक्रिया और यथार्थकी कठोर भूमिसे असम्पृक्त रहना चाहते हैं अतः वे रचना-प्रक्रियाको जीवन-प्रक्रियासे नितान्त पृथक्, कभी-कभी अनिवार्यतः विरोधी मान लेते हैं। वे कहते हैं कि उनकी काव्यप्रेरणा किसी दिव्य अशरीरी लोकसे आती है, उनका रचनाकार 'द्रष्टा' और 'स्वयम्भू' है अतः साधारण प्राणीसे कुछ ज़्यादा ऊँचा है – और फिर यह तर्क यहाँतक ले जाता है कि न केवल रचनाकारके 'प्राण', वरन् उसकी वेश-भूषा, बातचीत, तौर-तरीक़ा, सब साधारणसे कुछ पृथक् होनी अनिवार्य हो जाती है – लोकोत्तर – क्योंकि उसकी मृदु-मृदु प्रतिभा तो इस लोकमें भटकी हुई अश्रुमय कोमल परदेशिनी है।

काव्य-सृजनकी वास्तविक भूमिकी जटिलतासे ये दोनों मार्ग मुक्ति दिलाते हैं अवश्य; यह बात दूसरी है कि इन दोनों मार्गोंपर चलकर वह न मिले जो सम्पूर्णतः कविता है, या जो प्रौढ़ कविता है। कभी-कभी रोचक लगती है उनकी नियति जो कभी इस मार्गपर भागते हैं कभी उस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मार्गपर और ज्यों-ज्यों आगे जाते हैं त्यों-त्यों मूलतः कविता-से दूर होते जाते हैं।

इनसे बहुत अलग है वह भावस्थिति जो अपनेको रचनाकार मानते हुए भी अपनेको सामान्यसे पृथक् नहीं मानती, रोज़मर्राकी ज़िन्दगीमें अपनेको परदेशिनी नहीं मानती। ऐसे लोग असाधारणताका बाना नहीं ओढ़ते, सहज रूपमें जीवनको सम्पूर्ण परिवेशमें जीनेके हामी हैं, व्यक्तित्वको हारते नहीं, जगत्को अस्वीकारते नहीं, और अपने हर अकेलेपनमें अभिव्यक्तिके द्वारा अपनेको 'सर्व'से 'प्रत्येक'-से जोड़नेकी चेष्टा करते हैं। राह उनकी अँधेरी होगी ही, पर इससे क्या, वे रचते भी तो उसीमें-से हैं।

काव्य-सृजनकी इस जटिल भूमिपर, इस तमाम प्रक्रिया-में-से एक सजीव रचना उभरती आती है, मनके चेतन और अर्द्धचेतन स्तरोंमें-से रूपायित होती हुई। कभी, धीरे-धीरे विभिन्न स्थितियोंमें-से गुज़रते हुए, एक-एक कण बनते हुए, रचनाकार अपने चेतन अंशसे उसे महसूस करता है। कभी-कभी रचनाकी प्रारम्भिक स्थितियोंसे रचनाकारका चेतन मन स्वतः अनवगत रहता है। जानता है तब, जब अकस्मात् उसका विस्फोट होता है। घण्टे-भरमें, दो घण्टे-भरमें मोहाविष्ट-सा रचनाकार उसे प्रस्तुत कर देता है।

एक सप्राण सजीव रचना प्रस्तुत कर देनेके बाद फिर रचनाकारका कार्य समाप्त हो जाता है।

उसके बाद फिर प्रक्रियाका दूसरा मोड़ प्रारम्भ हो जाता है जिसमें रचना सीधे पाठकके समक्ष होती है और रचनाकार बीचसे हट जाता है। अब नये प्रश्न उठने लगते हैं : रचनामें-से पाठक क्या पाता है? क्या कविने जो अनुभव किया है उसका संवेदन पाठकको होता है? या वह अनुभव फिर नये सिरेसे पाठकके मनमें पुनःरचित होता है? या पाठकके मनमें कवितासे जो जागता है वह कोई तीसरा ही अनुभव है?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुत महत्त्वपूर्ण हैं ये प्रश्न – लेकिन इनसे कथाका दूसरा ही चरण प्रारम्भ होता है, जिसमें रचनाकार स्वतः तटस्थ जिज्ञासु-मात्र रह जाता है क्योंकि वह अब स्वरचित कृति और पाठकके बीचसे हट गया है..........

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# प्रमथ्यु गाथा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रमथ्यु एक यूनानी पुराण-पुरुष है जो सृष्टिके आरम्भमें पहली बार स्वर्गसे, द्युपितरके महलोंसे मनुष्योंके त्राणके लिए अग्नि हर लाया था। दण्डस्वरूप द्युपितरने उसे एक शिलासे बँधवा दिया था और एक गिद्ध निरन्तर उसके हृदयपिण्डको खाते रहनेके लिए तैनात कर दिया गया था। प्रस्तुत रचनामें प्रमथ्यु, द्युपितर, अग्नि, युद्ध सभी अपना-अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

३

## प्रमथ्यु गाथा

प्रमथ्यु

जकड़े हुए हैं ये मेरे हाथ
लौह शृंखलाओं से
जड़ी हुई जो कीलों से
इस आदिम चट्टान से,

टूटी हुई हैं पसलियाँ
और मन का घाव
अन्दर का सारा दर्द
नंगा अनावृत है

भारतीय राजदूतावास
पुस्तकालय
काठमाडौं

द्युपितर की आज्ञा से
नरभक्षी बूढ़ा गृद्ध
मेरे कन्धों पर बैठ
दिन-भर नोचा करता है मेरा हृदयपिण्ड
और मैं बेबस हूँ
बन्दी हूँ।

मैंने, क्योंकि मैंने ही
प्रथम बार साहस किया
द्युपितर के महलों से अग्नि छीन लाने का

अन्धी घाटी में भयभीत भेड़ के समान
पृथ्वी यह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अँधियारे में थी सहमी खड़ी

मैंने, हाँ मैंने ही प्रथम बार साहस किया

**युपितर**

साहस नहीं था;
मैंने जो नक़शा बनाया था
मानव अस्तित्व का –
उसमें थी दासता,
विनय थी, कायरता थी
भय था, आतंक था
अँधेरा था
यह जो
इस व्यक्ति ने
अँधेरे को देकर चुनौती
दुस्साहस किया
यह मेरी सत्ता का प्रथम अनादर था

मैंने इसे दण्ड दिया
वर्जित थी ज्योति
और गर्हित था स्वातन्त्र्य
साहस उत्पन्न ही नहीं था किया मैंने तब
इसकी यह लायी हुई आग
अगर साहस बन फैल गयी होती मनुष्यों में
फिर वे उठाते सिर
फिर फिर वे उठाते सिर······

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## जन-साधारण

मूरख नहीं हैं जी !
हम क्यों उठाते सिर
हम क्यों ये सब साहस करते व्यर्थ
अग्नि जिसे लाना था ले आया !

अग्नि नहीं थी जब
तब हमने नहीं कहा
कि जाओ अग्नि लाओ तुम
और अग्नि जब आयी
हमने नहीं कहा कि अग्नि नहीं लेंगे हम !

यह जो हम अब भी खड़े हैं
प्रमथ्यु के आस-पास –
इसलिए नहीं कि हम कुछ
उसके अनुगामी हैं,

हम हैं तमाशबीन
देख रहे हैं कैसे जकड़ा हुआ है शिलाओं से
कैसे वह कन्धे पर बैठा हुआ गिद्ध
नोच-नोच खाता है उसका हृदयपिण्ड
और रात ढलते-ढलते कैसे
सारा घाव फिर से पुर जाता है
ताकि गिद्ध फिर नोचे

यह है करिश्मा और
हम सब करिश्मों के प्यासे हैं !
चाहता अगर तो हममें-से हर एक व्यक्ति
अपने ही साहस से प्रमथ्यु हो सकता था

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकिन हम डरते थे,
ज्योति चाहते थे
पर दण्ड भोगने से हम डरते थे !

हम सब करिश्मों के प्यासे हैं
कोई भी करिश्मा कर दिखलाये
हम ख़ुद क्यों लें कोई भी निर्णय
हम ख़ुद क्यों भोगें कोई भी दण्ड ?

अग्नि

वे थे सब स्वार्थी
विलासी थे, कायर थे
जिनके महलों में मैं बन्दी थी

मुक्त किया मुझको प्रमथ्यु ने

उसने कहा
तुम हो ज्योति
तुम्हीं जीवन हो

माथे से अपने लगा कर प्रमथ्यु ने
फेंक दिया फिर मुझको इन कायरों के बीच

मुझसे ये
सुबह-शाम चूल्हा सुलगायेंगे
शय्या गरमायेंगे
सोना गलायेंगे
और ज़रा-सा मौक़ा पाते ही
अपने पड़ोसी का सारा घर फूकेंगे !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुझको क्यों मुक्त किया
मुझको क्यों माथे से लगा कर
फिर फेंक दिया इन कायरों के बीच !

प्रमथ्यु

मुझको मालूम नहीं था कुछ भी
डूबा था सब कुछ अँधियारे में
अँधियारे में मैं भी डूबा था

अग्नि किसे कहते हैं
इसका आभास भी नहीं था मुझे

गिद्ध यह बैठा है जो मेरे कन्धों पर
ऊपर उड़ते-उड़ते पहली बार इसने देखी थी
झलक अग्नि की !

साहस था मेरा
किन्तु द्युपितर के महलों की गुप्त राह
इसने बतायी मुझे –
गुरुजन है !
सच है यह
मेरे कन्धों पर बैठ
नोच-नोच खाता है यह मेरा हृदयपिण्ड
फिर भी मेरा मस्तक नत है
होंठों को भींचे निश्शब्द सह रहा हूँ मैं
क्योंकि यह बूढ़ा गृद्ध गुणी है, ज्ञाता है ।

मस्तक नत है मेरा
इसलिए नहीं कि हूँ पराजित मैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसलिए कि जिनके हित अग्नि जीत लाया हूँ
उनमें नहीं है साहस या संवेदना
जिसमें नहीं है साहस प्रमथ्यु बनने का
उसको बिना पीड़ा के मिल जानेवाली अग्नि
माँजती नहीं है
और पशु ही बनाती है !
अग्नि मिलने पर भी
वे सब पशु के पशु हैं
जिनको नृशंस स्वाद आता है
मेरी इस मर्मान्तक पीड़ा में !
देता है जो बूढ़ा गिद्ध
मेरे ही कन्धों पर बैठकर

**गृद्ध**

कटु मत हो
सुनो वत्स !
शोभा नहीं देती है कटुता प्रमथ्यु को
सच है यह
मैंने ही प्रेरित किया था तुम्हें देव-अग्नि लाने को
क्योंकि धरा पर नीचे गहरा अँधियारा था

जीवन-भर मैंने आकाश में
निरर्थक चक्कर काटे
ऊँचे पर्वत, उबड़-खाबड़ घाटीवाली
धरती पर कैसे उतरता मैं ?
नीचे अँधियारा था

अब मैं हूँ बूढ़ा
और मेरे थके हैं पंख

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कबतक आकाश में विहार करूँ
सिवा तुम्हारे इन सबल पुष्ट कन्धों के और कहाँ बैठूँ मैं ?
कटु मत हो !
आहत है मेरा अहम्
मेरे थे पंख और मैंने देखी थी अग्नि
मैं भी ला सकता था
किन्तु एक थोड़े-से साहस के बग़ैर
मैं अग्नि जीत लाने से वंचित रहा

तुम हो मेरे प्रियजन
मेरा यह आहत अहम्
अगर तुम्हारे मांसपिण्ड से बुझाता है
अपनी भूख
तो तुम क्या इतना भी नहीं सहोगे मेरे लिए

सुनो वत्स !
मुझको यदि मानते हो गुरुजन
तो बात सुनो
सहते चलो सब कुछ
माथे पर शिकन नहीं लाना कभी
मन में घृणा नहीं लाना कभी
घृणा वह ज़हर है
जो नसों में प्रवाहित
रक्त को दूषित करता है
और वह रक्त
वह तुम्हारा रक्त
अन्ततोगत्वा मुझको ही तो पीना है !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



पियो !
जी भरकर पियो,

गुरुजन हो
मेरी शिराओं में रक्त बह रहा है तुम्हारा ही
जी भर पियो !

कटु मैं नहीं हूँ
घृणा किससे करूँगा मैं

ये जो जन हैं, साधारण जन हैं
उनमें से एक-एक के अन्दर
मूर्च्छित प्रमथ्यु कहीं बन्दी है !
अवसर जिसे मिला नहीं साहस कर पाने का

कोई तो ऐसा दिन होगा
जब मेरे ये पीड़ा-सिक्त स्वर
उसके मन को बेध मूर्च्छित प्रमथ्यु को जगायेंगे !
उस दिन
हाँ, उस दिन
अकेला मैं रहूँगा नहीं
सबके हृदयों में मैं जागूँगा
मैं – प्रमथ्यु :
कटु मैं नहीं हूँ
घृणा किससे करूँगा मैं ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

४

## नया रस

प्रभु
इस रस को
इस नये रस को क्या कहते हैं ?

जिसमें श्रृंगार की आसक्ति नहीं
जिसमें निर्वेद की विरक्ति नहीं
जिसमें बाँहों के
फूलों-जैसे बन्धन के
आकुल परिरम्भण की गाढ़ी तन्मयता के क्षण में भी
ध्यान कहीं और चला जाता है
तन पिघले फूलों की
आग पिया करता है
पर मन में कई प्रश्नचिह्न उभर आते हैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यह सब क्या है ?
क्यों है ?
इसके बाद
– और बाद
– और बाद
– और बाद
फिर क्या है ?
चुम्बन आलिंगन का जादू
मन को जैसे ऊपर-ही-ऊपर से छूकर रह जाता है

अन्दर ज़हरीले अजगर-जैसे प्रश्नचिह्न
एक-एक पसली को जकड़-जकड़ लेते हैं
फिर भी बेक़ाबू तन
इन पिघले फूलों की रसवन्ती आग बिना
चैन नहीं पाता है
प्रभु,
इस रस को
इस नये रस को क्या कहते हैं ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## नवम्बर की दोपहर

अपने हलके-फुलके उड़ते स्पर्शों से मुझको छू जाती है
जार्जेट के पीले पल्ले-सी यह दोपहर नवम्बर की !

आयीं गयीं ऋतुएँ पर वर्षों से ऐसी दोपहर नहीं आयी
जो क्वाँरेपन के कच्चे छल्ले-सी
इस मन की उँगली पर
कस जाये और फिर कसी ही रहे
नितप्रति बसी ही रहे, आँखों में, बातों में, गीतों में
आलिंगन में घायल फूलों की माला-सी
वक्षों के बीच कसमसी ही रहे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भीगे केशों में उलझे होंगे थके पंख
सोने के हंसों-सी धूप यह नवम्बर की
उस आँगन में भी उतरी होगी
सीपी के ढालों पर केसर की लहरों-सी
गोरे कन्धों पर फिसली होगी बिन आहट
गदराहट बन-बन ढली होगी अंगों में

आज इस वेला में
दर्द ने मुझको
और दोपहर ने तुमको
तनिक और भी पका दिया
शायद यही तिल-तिल कर पकना रह जायेगा
साँझ हुए हंसों-सी दोपहर पाँखें फैला
नीले कोहरे की झीलों में उड़ जायेगी
यह है अनजान दूर गाँवों से आयी हुई
रेल के किनारे की पगडण्डी
कुछ क्षण सँग दौड़-दौड़
अकस्मात् नीले खेतों में मुड़ जायेगी······

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## फागुन के दिन की एक अनुभूति

फागुन के सूखे दिन
क़स्बे के स्टेशन की धूल-भरी राह बड़ी सूनी-सी
ट्रेन गुज़र जाने के बाद
पके खेतों पर ख़ामोशी पहले से और हुई दूनी-सी
आँधी के पत्तों-से
अनगिन तोते-जैसे टूट गिरे
लाइन पर, मेड़ों पर, पुलिया के आस-पास
    ( सब कुछ निस्तब्ध, शान्त मूर्च्छित-सा……
    अकस्मात्– )
    चौकन्नी लोखरिया उछली
    औ' तेज़ी से तार फाँद लाइन कर गयी क्रास

    जैसे शीशे में चटखे दरार
    सहसा यह मुझको एहसास हुआ –
    यह सब है और किसी का
    यह पगडण्डी, यह गाँव-खेत, सुग्गों के हरे पंख,
                                        गति, जीवन :
                        सबका सब और किसी का
  मेरा है केवल निर्वासन, निर्वासन, निर्वासन……
  ……………………………………

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## उत्तर नहीं हूँ

उत्तर नहीं हूँ
मैं प्रश्न हूँ तुम्हारा ही !

नये-नये शब्दों में तुमने
जो पूछा है बार-बार
पर जिस पर सब के सब केवल निरुत्तर हैं
प्रश्न हूँ तुम्हारा ही !

तुमने गढ़ा है मुझे
किन्तु प्रतिमा की तरह स्थापित नहीं किया
या
फूल की तरह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुझको बहा नहीं दिया
प्रश्न की तरह मुझको रह-रह दोहराया है
नयी-नयी स्थितियों में मुझको तराशा है
सहज बनाया है
गहरा बनाया है
प्रश्न की तरह मुझको
अर्पित कर डाला है
सबके प्रति

दान हूँ तुम्हारा मैं
जिसको तुमने अपनी अंजलि में बाँधा नहीं
दे डाला !

उत्तर नहीं हूँ मैं
प्रश्न हूँ तुम्हारा ही !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## जिज्ञासा

मणिशय्या पर जल-बालाओं का प्यार
या सागर का विष-मन्थन अपरम्पार
क्या पायेंगे
प्रभु,
हम क्या पायेंगे ?

आख़िर आयेगा वह दिन
जिस दिन होंठों पर यद्यपि होंगे होंठ
पर खाई होगी हम दोनों के वीच
जिस दिन बाँहों में यद्यपि होगी बाँह
पर सब रस सहसा कोई लेगा खींच

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

५

जिस दिन यह सारा आकुल प्रणयोन्माद
रह जायेगा केवल पिछला अभ्यास
जिस दिन यद्यपि तन होगा तन में लीन
पर मुरदा होगी मन की सारी प्यास

उस दिन होगा फिर यह सिद्ध
वैयक्तिक सीमा में बद्ध –
जितना झूठा है यह दुख
उतना ही झूठा है सुख
सुख-दुख इन दोनों के पार
क्या पायेंगे
प्रभु
हम क्या पायेंगे ?

वैयक्तिक सीमाएँ तोड़
इतिहासों के संग गति मोड़
जिस दिन हम युग-पथ पर जन-जन के साथ
बढ़ते होंगे फिर दृढ़ पग, उन्नत-माथ
हम सब के होंठों पर सामूहिक गीत
गतियों की वल्गा जन-नायक के हाथ
आयेगा ऐसा भी दिन
जब नायक की कोई छोटी-सी भूल
सहसा अभियानों को कर दे पथभ्रष्ट –
युगवाही सपनों पर पड़ जाये धूल
आत्मा में केवल अँधियारा औ' कष्ट;

कूड़े-सा हमको तज कर तट के पास
मन्थर गति से बढ़ जायेगा इतिहास

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सामूहिकता भी केवल
साबित होगी जिस दिन छल

अपनी वैयक्तिकता हार
क्या पायेंगे
प्रभु,
हम क्या पायेंगे ?

लेकिन इन दोनों के बीच
मेरे ये तीखे पर एकाकी स्वर
केवल सच्चाई का आश्रय लेकर
गूँजेंगे,या रव में खो जायेंगे
या ये स्वर पहुँचेंगे जन-ज़न के द्वार

लज्जित माथे पर काँटों का सिंगार
या मंगल-वादन, जयध्वनि, बन्दनवार
क्या पायेंगे
प्रभु,
हम क्या पायेंगे ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## संक्रान्ति

सूनी सड़कों पर ये आवारा पाँव
माथे पर टूटे नक्षत्रों की छाँव

कब तक
आख़िर कब तक ?

चिन्तित माथे पर ये अस्तव्यस्त बाल
उत्तर, पच्छिम, पूरब, दक्खिन-दीवाल

कब तक
आख़िर कब तक ?

लड़ने वाली मुट्ठी ज़ेबों में बन्द
नया दौर लाने में असफल हर छन्द

कब तक
आख़िर कब तक ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## पराजित पीढ़ी का गीत

हम सब के दामन पर दाग़
हम सबकी आत्मा में झूठ
हम सबके माथे पर शर्म
हम सबके हाथों में टूटी तलवारों की मूठ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हम थे सैनिक अपराजेय
पर हम थे बेबस लाचार
यह था कठपुतलों का खेल
ऊपर थी क़लई, पर लकड़ी के थे सब हथियार !

हम सबके थे अपने गीत
आख़िर तक गाने की शर्त
पर जाने कैसे ऐसे बदले बोल –
हमने गाया कुछ, पर कुछ निकला अर्थ !

तुम क्या जानोगे ओ प्रभु !
उसके मन का कटु विक्षोभ
जिसकी निष्ठा के आगे
गर्हित था छोटे से छोटे समझौते का लोभ !

तुमने कब झेली संक्रान्ति
तुम क्या समझोगे ओ प्रभु !
इन गत्यवरोधों का दर्द –
कैसे तरुणाई में ही
घुट मर जाते हैं विश्वास
प्राणों की समिधाएँ जम कर हो जाती हैं सर्द !

फिर भी यदि तुमको मंज़ूर
हमको भटकाओ कुछ और
यदि तुमको फिर भी मंज़ूर
सच्चाई की बाँहों में हम सब पायें मत ठौर,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तो कम से कम करुणामय
इतना तो दो ही वरदान
दो हमको फिर झूठे लक्ष्य
दो हमको फिर झूठे युद्धों का झूठा मैदान !

तुम क्या जानोगे ओ प्रभु
संघर्षों के ही अभ्यासी ये प्राण
हो जाते कितने बेचैन
छिन जाते हमसे जब शस्त्र, छिन जाते ईमान !

दो हमको फिर झूठे युद्ध
दो हमको फिर झूठे ध्येय
हारेंगे फिर यह है तय
फिर उसको मानेंगे हम प्रभु की हार
अपने को मानेंगे फिर अपराजेय !

हम सबके दामन पर दाग़
हम सबकी आत्मा में झूठ
हम सबके माथे पर शर्म
हम सबके हाथों में टूटी तलवारों की मूठ !

हम सब सैनिक अपराजेय !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## कौन चरण ?

जिस दिन
अपनी हर आस्था तिनके-सी टूटे
जिस दिन
अपने अन्तरतम के विश्वास सभी निकलें झूठे,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उस दिन होंगे
वे कौन चरण
जिसमें इस लक्ष्यभ्रष्ट मन को
मिल पायेगी अन्त में शरण ?

जब हम पर छाये भ्रम दोहरा
जर्जर तन पर कल्मष, हारे मन पर कोहरा
हर एक सूत्र जिसको समझे हम प्रभु का स्वर
कसने पर जिस दिन साबित हो शब्दाडम्बर
हर क़दम पड़े झूठा
जैसे चौसर का पिटा हुआ मोहरा

उस दिन
होंगे वे कौन चरण
जिनमें इस लक्ष्यभ्रष्ट मन को
मिल पायेगी अन्त में शरण ?

जिसकी लय पर
साधे हमने आत्मा के स्वर
वे अकस्मात् मुड़ जिस दिन पथ गह लें दूजा
अन्तर में घुटती रह जाये टूटी पूजा
माथे के नीचे रह जाये ठण्डा पत्थर

उस दिन
होंगे वे कौन चरण
जिनमें इस लक्ष्यभ्रष्ट मन को
मिल पायेगी अन्त में शरण ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai



सब जलने पर जो शेष रहे कण-भर सोना
काँपती उँगलियों से हमको जिस रोज़ पड़े वह भी खोना
अपनी साँसें तक भूलें जब अपना परिचय
पाँवों नीचे तक की धरती जिस रोज़ न दे हमको आश्रय
जब हमें निगलने दौड़े ख़ुद अपने मन का कोना-कोना

उस दिन
होंगे वे कौन चरण
जिनमें इस लक्ष्यभ्रष्ट मन को
मिल पायेगी अन्त में शरण ?

''उस दिन
मैं दूँगा तुम्हें शरण
मैं जनपथ हूँ
मैं प्रभुपथ हूँ, मैं हूँ जीवन
जिस क्षितिज रेख पर पहुँच व्यक्ति की राहें झूठी पड़ जातीं
मैं उस सीमा के बाद पुनः उठने वाला नूतन अथ हूँ
मैं प्रभुपथ हूँ
जिसमें हर अन्तर्द्वन्द्व, विरोध,
विषमता का
हो जाता है अन्त में शमन !''

''प्रभु !
पर तुम तो केवल पथ हो
चलना तो हमको ही होगा
हिम की ठण्डी चट्टानों पर

9565.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गलना तो हमको ही होगा
सब टूटे और अधूरे हम
इस जनपथ को
इस प्रभुपथ को
कर पायेंगे किस तरह ग्रहण ?

हमको कुछ ऐसा लगता प्रभु
ऐसे कोई भी नहीं चरण
जिसमें मिल पाये हमें शरण
तुम भी केवल निष्क्रिय पथ हो

चलना तो हमको ही होगा
चलने में ही हम टूटों और अधूरों का
शायद कुछ होगा नया गठन
आश्रय देंगे हमको अपने
जर्जर पर अपराजेय चरण

आख़िर होंगे वे यही चरण
जिसमें इस लक्ष्यभ्रष्ट मन को
मिल पायेगी अन्त में शरण !"

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## इनका अर्थ

ये शामें, ये सब की सब शामें……
जिनमें मैंने घबरा कर तुमको याद किया
जिनमें प्यासी सीपी-सी भटका विकल हिया
जाने किस आने वाले की प्रत्याशा में
ये शामें
इनका क्या कोई भी
अर्थ नहीं ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ये लमहे, ये सारे सूनेपन के लमहे
जब मैंने अपनी परछाहीं से बातें कीं
दुख वे सारी टूटी वीणाएँ फेंकीं
जिनमें अब कोई भी स्वर न रहे
ये लमहे,
इनका क्या कोई भी
अर्थ नहीं ?

ये घड़ियाँ—ये बेहद भारी-भारी घड़ियाँ
जब मुझको फिर यह एहसास हुआ
अर्पित होने के अतिरिक्त और राह नहीं
जब मैंने झुक कर फिर माथे से पन्थ छुआ
फिर वीनी गत-पग-नूपुरसे बिखरी मणियाँ
ये घड़ियाँ
इनका क्या कोई भी
अर्थ नहीं ?

ये घड़ियाँ, ये शामें, ये लमहे
जो मन पर कोहरे से जमे रहे
निर्मित होनेके क्रम में
क्या
इनका कोई अर्थ नहीं ?

जाने क्यों कोई मुझसे कहता
मन में कुछ ऐसा भी है रहता
जिसको छू लेने वाली कोई भी पीड़ा
जीवन में फिर जाती व्यर्थ नहीं !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्पित है पूजा के फूलों-सा जिसका मन
अनजाने दुख कर जाता उसका परिमार्जन
अपने से बाहर की व्यापक सच्चाई को
नतमस्तक होकर वह कर लेता सहज ग्रहण

ये सब बन जाते पूजागीतों की कड़ियाँ
यह पीड़ा, यह कुण्ठा, ये शामें, ये घड़ियाँ
इनमें-से क्या है
जिसका कोई अर्थ नहीं !
कुछ भी तो व्यर्थ नहीं !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## गैरिक वाणी

मेरी वाणी
गैरिक वसना
भूल गयी गोरे अंगों को
फूलों के वसनों में कसना
गैरिक वसना
मेरी वाणी !

अब विरागिनो
मेरा निज दुख, मेरा निज सुख
दोनों से तटस्थ रागिनी
अब विरागिनी
मेरी वाणी !

चन्दन-शीतल,
पीड़ा से परिशोधित स्वर में
उभरा एक नवीन धरातल
चन्दन-शीतल
मेरी वाणी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भटके हुए व्यक्ति का संशय
इतिहासों का अन्धा निश्चय
ये दोनों जिसमें पा आश्रय
बन जायेंगे सार्थक समतल

ऐसे किसी अनागत पथ का
पावन माध्यम-भर है
मेरी आकुल प्रतिभा
अर्पित रसना
गैरिक वसना
मेरी वाणी

जल-सी निर्मल
मणि-सी उज्ज्वल
नवल, स्नात
हिम धवल
ऋजु
तरल
मेरी वाणी।

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## केवल तन का रिश्ता

अब यह जूही के फूलों का तन नहीं रहा

हिरन की छलांगों-जैसा हलका फुर्तीला
लहरों में बल खाती किरनों-सा लचकीला
अब यह जूही के फूलों का तन नहीं रहा
पर जाने क्यों
यह पहले से अधिक सुन्दर है
जाने क्यों इसमें पहले से अधिक जादू है

अब इसमें ममता है
अब इसका रोम-रोम
तृष्णाओं, झगड़ों, समझौतों, मनुहारों की
जाने कितनी मीठी स्मृतियों से बसा हुआ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

७

कितनी बार चिन्ता से जलते हुए माथे को
इस तन से आश्रय मिला
कोमल हमदर्दी मिली
इस तन ने कितनी बार
प्रांजल, पवित्र स्नेह
मेरे हारे आकुल मन पर बिखेरा है
अब इसमें पहले से
कहीं अधिक ममता है
रस है
अपनापन है !

तन का –
केवल तन का रिश्ता भी
मांसलता से कितना ऊपर उठ जाता है

अब यह जूही के फूलों-सा तन नहीं रहा
पर इसमें पहले से कहीं अधिक जादू है !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## मेघ – दुपहरी

ढल रही है
मेघ की चूनर लपेटे दोपहर
एक उचटा हुआ-सा
सुनसान सन्नाटा अकेला जग रहा है
मेघ-धूमिल दिशाओं की बाँह में !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न जाने क्यों
आज यह अपना
बहुत परिचित बहुत प्यारा शहर
अजनबी, अनजान, अन्यमनस्क-सा लग रहा है
बादलों की नील-जमुनी छाँह में !

वही मैं हूँ
वही मेरा वीतरागी मन
नहीं अब जिसमें किसी से
ख़ास कोई नेह, कोई लगन
किन्तु फिर क्यों चित उचटता काम से ?
क्यों उदासी और बढ़ती शाम से ?

छू गयी मुझको
न जाने कौन बिसरी बात
भूला क्षण
जिस तरह छू जाय नागिन
फूल को खिलते पहर
ढल रही है
मेघ की चूनर लपेटे दोपहर !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## प्लेटफ़ॉर्म

बहुत उदास-सा पीले गुलाब-सा चेहरा
हथेलियों में टिका हुआ गुमसुम
...................................
सुनो इतनी अजीब-सी क़िस्मत
ले के पैदा हुए थे क्यों हम तुम ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## इतने दिन बाद

एक अनजबी को देख
आँगन में नहाती हुई गौरैया भागी
और झुरमुट में छिपकर व्याकुलता से चहकी;
मुझको पहचान आज
आज इतने दिनों बाद देख
थाले की जूही कुछ डोली, उदासी से महकी;

सिर्फ़ एक तुम थीं
जो हिलीं नहीं, डुलीं नहीं
ज़ीने पर खड़ी रहीं
यादों में डूबी-सी, ख़यालों में बहकी!

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## क़स्बे की शाम

झुरमुट में दुपहरिया कुम्हलायी
खेतों पर अन्हियारी घिर आयी
पश्चिम की सुनहरिया धुँधरायी

टीलों पर, तालों पर,
इक्के-दुक्के अपने घर जाने वालों पर
धीरे-धीरे उतरी शाम !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आँचल से छू तुलसी की थाली
दीदी ने घर की ढिबरी बाली
जमुहाई ले-लेकर उजियाली,

जा बैठी ताखों में,
घर-भर के बच्चों की आँखों में
धीरे-धीरे उतरी शाम !

इस अधकच्चे-से घर के आँगन
में जाने क्यों इतना आश्वासन
पाता है यह मेरा टूटा मन

लगता है इन पिछले वर्षों में
सच्चे-झूठे, मीठे-कड़वे संघर्षों में
इस घर की छाया थी छूट गयी अनजाने
जो अब झुक कर मेरे सिरहाने –
कहती है :
"भटको बेबात कहीं !
लौटोगे अपनी हर यात्रा के बाद यहीं !"

धीरे-धीरे उतरी शाम !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## धूल-भरी आँधी का गीत

ओ रे
धूल-भरे पवन झकोरे !

तेरे हाथों बिलकुल बेबस हूँ मैं
जैसे चाहे तू ने हरदम खींचे डोरे !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

८

आज गया तू पिछली यादें झकझोर–
पहला-पहला घायल मन, वय कैशोर
ऐसी थी, बिलकुल ऐसी ही थी शाम
सूने चौराहों पर आँधी का शोर···

आँधी-सी ही थी जो निकल गयी
शेष रहे उखड़े बिरवे, टूटी डार
उस दिन जो बहका तो आज तक
न पहुँच सका मैं अपने ही घर के द्वार
झूठे आलिंगन से, झूठे आलिंगन तक
यूँ मैं भटका कितनी बार!

अब तो पग जर्जर, राहें नामालूम
आ मेरे बालों को बिखरा कर चूम
मुझ पर कर टूटे पत्तों की बौछार
कसकन से भर मेरी पलकें मासूम

जाने क्या है तुझमें जिसके आगे फीके
लगते हैं अंगों के जादू गोरे···

पतझड़ की संझा को
पाहुन बन कर आ,
जो सूखे मुँह, धूल-भरे पवन झकोरे!
ओऽऽऽरे!

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## आँगन

बरसों के बाद उसी सूने-से आँगन में
जाकर चुपचाप खड़े होना
रिसती-सी यादों से पिरा-पिरा उठना
मन का कोना-कोना

कोने से फिर उन्हीं सिसकियों का उठना
फिर आकर बाँहों में खो जाना
अकस्मात् मण्डप के गीतों की लहरी
फिर गहरा सन्नाटा हो जाना
दो गाढ़ी मेंहदी वाले हाथों का जुड़ना,
कँपना, बेबस हो गिर जाना

रिसती-सी यादों से पिरा-पिरा उठना
मन का कोना-कोना
बरसों के बाद उसी सूने-से आँगन में
जाकर चुपचाप खड़े होना !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अवशिष्ट

दुख आया
घुट-घुट कर
मन-मन मैं खीज गया

सुख आया
लुट-लुट कर
कन-कन मैं छीज गया

क्या केवल
इतनी पूँजी के बल
मैंने जीवन को ललकारा था

वह मैं नहीं था, शायद वह
कोई और था
उसने तो प्यार किया, रीत गया, टूट गया
पीछे मैं छूट गया

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## उपलब्धि

मैं क्या जिया ?
मुझको जीवन ने जिया –
बूँद-बूँद कर पिया, मुझको
पीकर पथ पर ख़ाली प्याले-सा छोड़ दिया

मैं क्या जला ?
मुझको अग्नि ने छला –
मैं कब पूरा गला, मुझको
थोड़ी-सी आँच दिखा दुर्बल मोमबत्ती-सा मोड़ दिया

देखो मुझे
हाय मैं हूँ वह सूर्य
जिसे भरी दोपहर में
अँधियारे ने तोड़ दिया !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## स्वयम् को दुहरायेगा ?

प्यार यह क्या अब कभी भी स्वयम् को दुहरायेगा ?
नहीं ! शायद नहीं

होंठ पर अब होंठ जब भी आयेगा
आँसुओं का वही खारा स्वाद फिर-फिर पायेगा

हाथ में जब हाथ कोई आयेगा
उष्ण ममता नहीं केवल एक ख़ालीपन उसे छू जायेगा

बाँह में जब जिस्म कोई आयेगा
बीच में तुमको सिसकता पायेगा

प्यार यह क्या अब कभी भी स्वयम् को दुहरायेगा
नहीं ! शायद नहीं

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## साबुत ग्राइने

इस डगर पर मोह सारे तोड़
ले चुका कितने अपरिचित मोड़

पर मुझे लगता रहा हर बार
कर रहा हूँ आइनों को पार

दर्पणों में चल रहा हूँ मैं
चौखटों को छल रहा हूँ मैं

सामने लेकिन मिली हर बार
फिर वही दर्पण मढ़ी दीवार

फिर वही झूठे झरोखे द्वार
वही मंगल चिह्न बन्दनवार

किन्तु अंकित भीत पर,बस रंग से

× × ×

अनगिनत प्रतिबिम्ब हँसते व्यंग से

फिर वही हारे क़दम की होड़
फिर वही झूठे अपरिचित मोड़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लौट कर फिर लौटकर आना वहीं
किन्तु इससे छूट भी पाना नहीं

टूट सकता, टूट सकता काश
यह अजय-सा दर्पणों का पाश

दर्द की यह गाँठ कोई खोलता
दर्पणों के पार कुछ तो बोलता

यह निरर्थकता सही जाती नहीं
लौटकर, फिर लौट कर आना वहीं

राह में कोई न रच पाऊँगा
अन्त में मैं क्या यही बच जाऊँगा

बिम्ब कुछ आइनों में भटका हुआ
चौखटों के क्रास पर लटका हुआ

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## रात अंधियारी : हवा तेज़

दीख नहीं पड़ते हैं पेड़,
मगर डालों से ध्वनियों के
अगणित झरने झरते झर-झर
तेज़ और मन्द
हर झकोरे के संग
हवा चलती है और ठहर जाती है !

सन्नाटा :
गूँगे के अनबोले वाक्य-सा –
जाग्रत है यह मेरा मन
पर निरर्थक है !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

९

ट्रेन ने सीटी दी······
दूर कहीं लोग अभी जीवित हैं
चलते हैं; यात्राएँ करते हैं; मंज़िल है उनकी !

याद पड़ता है कभी
बहुत सुबह पौ फटने के पहले
मैंने भी एक यात्रा की थी।
कच्ची पगडण्डी पर
दोनों ओर सरपत के झाड़ों में
इसी तरह,
तेज़ हवा चलती थी और ठहर जाती थी······

सीटी फिर बोली······
सुनो ! मेरे मन हारो मत !
दूर कहीं लोग अभी जीवित हैं;
यात्राएँ करते हैं, मंज़िल है उनकी

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## आस्था

रात :

पर मैं जी रहा हूँ निडर
जैसे कमल
जैसे पन्थ
जैसे सूर्य

क्योंकि
कल भी हम खिलेंगे
हम चलेंगे
हम उगेंगे

और
वे सब साथ होंगे
आज जिनको रात ने भटका दिया है !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## निर्माण-योजना

[ कविताकी मिनिस्ट्री-द्वारा प्रस्तुत ]

बाँध

बाँधो !
नदी यह घृणा की है
काली चट्टानों के

सीने से निकली है
अन्धी ज़हरीली गुफाओं से
उबली है !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसको छूते ही
हरे वृक्ष सड़ जायेंगे
नदी यह घृणा की है :

लेकिन नहीं है निरर्थक यह
बँधने से इसको भी अर्थ मिल जाता है।
इसकी ही लहरों में
बिजली के शक्तिवान घोड़े हैं सोये हुए !
जोतो उन्हें खेतों में, हलों में –
भेजो उन्हें नगरों में, कलों में –

बदलो घृणा को उजियाले में
ताक़त में,
नये-नये रूपों में साधो –
बाँधो –
नदी यह घृणा की है !

## यातायात

बिना किसा बाधा के
नित नयी दिशाओं में
जाने की
सुविधा दो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बिना किसी बाधा के
श्रम के पसीने से
सिंची हुई फ़सलों को
खेतों से आँतों तक जाने की
सुविधा दो

बिना किसी बन्धन के
हर चलते राही को
यात्रा में
अकसर थक जाने पर
मनचाहे नये गीत गाने की
सुविधा दो

कभी-कभी अजब-सी रहस्यमय पुकारों पर
मन को अपरिचित नक्षत्रों की राहों में
जाकर खो जाने की सुविधा दो !

## कृषि

ये फ़सलें काटो……
पिछले ज़माने में
बीज जो बोये विषमता के
आज वही साँपों की खेती उग आयी है !

धरती को फिर से सँवारो
क्यारी में बीज नये डालो
पसीने के, आँसू के
प्यार के, हमदर्दी के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेंड़ें मत बाँधो
भूमि सब की,
दर्द सब का है !

## स्वास्थ्य

वे सब बीमार हैं
वे जो उन्मादग्रस्त रोगी-से
मंचों पर जाकर चिल्लाते हैं
बकते हैं
भीड़ में भटकते हैं

वात पित्त कफ के बाद
चौथे दोष अहम् से पीड़ित हैं !

बस्ती-बस्ती में
नये अहम् के अस्पताल खुलवाओ
वे सब बीमार हैं
डरो मत—तरस खाओ !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## गुलाम बनानेवाले

और भी पहले वे कई बार आये हैं

एक बार
जब उनके हाथों में भाले थे
घोड़ों की टापोंसे ख़ैबर की चट्टानें काँपी थीं

एक बार
जब भालों के बजाय
उनके हाथों में तिजारती परवाने थे
बग़ल में संगीनें थीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकिन इस बार और चुपके से आये हैं

आधे हैं, जिनके हाथों में हैं
कैमरे,
थैलियाँ,
टूअरिस्ट पासपोर्ट,
रंग-बिरंगी फ़िल्में :

आधे हैं जिनके पास
रंग-बिरंगे चेहरे
[ जिनको वे हुक्म के मुताबिक़ बदल सकते हैं ]
दो-दो आने वाले
[ दूर किसी नगरी में छपे हुए ]
पैम्फ़्लेट,
रोटी और पैम्फ़्लेट के ढेरों में ढँक-ढँक कर आयी हैं
दूर किसी नगरी में ढली हुई ज़ंजीरें !

ढंग है नया
लेकिन बात यह पुरानी है :
घोड़ों पर रख कर, या थैली में भर कर,
या रोटी से ढँक कर, या फ़िल्मों में रंग कर
वे ज़ंजीरें, केवल ज़ंजीरें ही लाये हैं

और भी पहले वे कई बार आये हैं !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१०

## एक वाक्य

चेक बुक हो पीली या लाल,
दाम सिक्के हों या शोहरत–
कह दो उनसे
जो ख़रीदने आये हों तुम्हें
हर भूखा आदमी बिकाऊ नहीं होता है !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## वाणभट्ट

मिथ्या था जामुन के कुंजों से आच्छादित
शोण का निचाट कूल
मिथ्या था फागुन में गुच्छों-गुच्छों फूला
इंगुरी अशोक-फूल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मिथ्या था, स्मृति के अन्तरिक्ष में लुकता-छिपता हुआ
भट्टिनी का म्लान मुख
मिथ्या था, अपने को किसी महाराग को समर्पित कर
डूब-डूब जाने का अतीन्द्रिय सुख

सत्य है एक मणिजटित दुपट्टा, एक
मुद्रा-मंजूषा, एक पालकी !
सत्य हैं आत्मा पर थोपी हुई सीमाएँ
सोने के जाल की !
सत्य है कूटज्ञों, वधिकों, नगरसेठों, वेश्याओं के आगे
बिके हुए शब्दों की यह क्रीड़ा
सत्य है राजा हर्षवर्धन के हाथों से मिला हुआ
पान का सुगन्धित एक लघु बीड़ा

[ चाहे वह जूठा हो,
पर उस पर लगा हुआ वर्क़दार सोना था !
हाय वाणभट्ट ! हाय !
तुमको भी, तुमको भी, आख़िर यही होना था ! ]

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## बृहन्नला

आज से सौ बरस बाद
मेरी रचनाएँ पढ़ कर तुम यह जानोगे
इस संकटकाल में तो अर्जुन एक मैं ही था
अन्यायी हृदयों में सालती टंकारें थीं जिसके गाण्डीव की !
मैं ही दृष्टिहीनों की दुनिया में
आँखें खोल देखता रहा था यथार्थ को !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किंतु यदि वर्षों बाद मेरी रचनाएँ पढ़ने की जगह
मुझको आज देखो तुम –
तो कैसा लगेगा तुम्हें
मुझको यह जानने का कुतूहल है !

युद्धक्षेत्र, कर्मक्षेत्र में मुझको ढूँढ़ोगे व्यर्थ तुम
आज तो मिलूँगा मैं तुमको पराये अन्तःपुर में
चाटुकार विद्वानों मूर्खा महिषियों
अशिक्षित विदूषकों से घिरा हुआ

मैं जो हूँ नृपति विराट् का विश्वस्त दास
नृत्य, गीत, कविता, कलाओं का ज्ञाता,
किन्तु हरदम भयाक्रान्त –
मेरा अज्ञातवास खुल न जाय
छिन न जाय मेरी आजीविका इसी भय से
पीछे सभी को धोखा देकर
सामने सभी के झूठी क़समें खाता हुआ ।

कानों तक प्रत्यंचा खींचने के लिए ख्यात
मेरी भुजाएँ ये
मिलेंगी हर छोटे से छोटे दरबारी के सामने
प्रणाम से झुकी हुई;
पाओगे तुम मेरा ओजस्वी सैनिक तन
कुत्सित नपुंसक मुद्राओं में ढला हुआ;
मेरा विख्यात धनुष
तुमको मिलेगा किसी निर्जन तरु-शाखा पर
मुरदा चिमगादड़-सा टँगा हुआ !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

व्यास यह लिखेंगे कि
अन्यायी दुर्योधन जब हमला बोला था विराट नगरी पर
मैंने भी अपना प्रदर्शित किया था शौर्य !

कैसा लगेगा तुम्हें
जब तुम यह जानोगे
कि यह तो लिखाया था मैंने ही
सुबह-शाम जा-जा कर
दु:ख की गाथा गा कर
पाँवों पड़-पड़ बूढ़े व्यास के !

असल में हुआ यह था
मेरे चारों भाई जूझते अकेले रहे
मैं तो किनारे खड़ा हर आने वाले से
घबरा कर कहता था – ''इधर मत,
इधर मत,इधर मत, आना जी तुम; इधर हम तटस्थ हैं !''

कैसा लगेगा तुम्हें
जब तुम यह जानोगे
कि मैं तो गया था वहाँ
लड़नेके लिए नहीं –
रक्त-सने, बेबस, दम तोड़ते शवों के
गहने कपड़े लूटने के लिए !

कैसा लगेगा तुम्हें
जब तुम यह जानोगे
कि दूसरे जब जूझ रहे थे नवयुग लाने को
मैंने सिर्फ़ उत्तरा की गुड़ियाँ सजायी थीं !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## टूटा पहिया

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत !

क्या जाने कब
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाय !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ !
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ

लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

११

## एक अवतार में

सुनते हैं तुम किसी अवतार में कछुए थे

अपनी इस वज्रोपम पीठ पर
तुमने यह धरती टिकायी थी –
    [ लेकिन उपयोग क्या किया था
    सुकोमल मर्मस्थल का ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उससे क्या नीचे उतर
थाहा था अनस्तित्व का सागर
पतनोन्मुख होकर

दिग्भ्रम, निराशा, भटकन
सीलन, कीचड़, काई
पाप, उबकाई —
के स्तर छुए थे ?]

याद करो प्रभु,
जब तुमने पीठ पर
धरती उठायी थी –
सबका बोझ
अपने पर लेने की
ताक़त कहाँ पायी थी ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## दान : प्रभु के नाम !

राह पर बिछाये हैं
मैंने जो –
तीखे नुकीले – ये
पूजा के फूल नहीं
शीशे के टुकड़े हैं –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पाँवों में गड़ेंगे जब
सामने पड़ेंगे जब

तुमको दिखायेंगे
कुछ टूटी शकलें
प्रभुताई, मसीहाई
की भोंड़ी नक़लें

देख जिन्हें ग़ुस्से से उबलता हूँ
उबलता हूँ
उबलता हूँ
कर तो कुछ सकता नहीं !

[ क्रोध अभिमान भी मुझी को अर्पित कर दो
तस्मिन्नेव करणीयं क्रोधमानादिकम् ]
तुम भी कहोगे क्या
आओ !
सब कुछ खोया है जब मैंने
एक-एक कर
मोह क्या इसी का करूँ ?
क्रोध, अभिमान का ?
इसको भी माँगते हो ?
ले जाओ !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अर्द्ध-स्वप्न का नृत्य

दीपक की लौ काँपी
परदों में लहर पड़ी

शीशे में अनजाने तन के आभास हिले
अनदेखे पग में जादू के घुँघरू छमके
क़ालीनों के ऊनी फूल दबे और खिले
थाप पड़ी पहले कुछ तेज़ी से, फिर थम के

किसने छेड़ी पिछले
जनमों में सुनी हुई
एक किसी गाने की
पहली रंगीन कड़ी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अगहन के कोहरे से निर्मित हलके तन के
टोने सहसा जैसे कमरे में घूम गये –
हाथों में ताज़ी कलियों के कँगने खनके
कन्धों पर वेणी के फूलसाँप झूम गये

दीपक के हिलते
आलोकों को छेड़ गयीं
चम्पे की लहराती
बाँहें बड़ी - बड़ी

इन बहकी घड़ियों की गहरी ख़ामोशी में
जाने कब रात हुई जाने कब बीत गयी
मन के अँधियारे में उभरे धीमे-धीमे
रंगों के द्वीप नये, वाणी की भूमि नयी

मणियों के कूल नये
जिन पर हम भूल गये
लक्ष्यहीन यात्राओं की
वह सुनसान घड़ी

नर्तन यह खींच कहाँ मुझको ले जायेगा
क्या ये सब पिछली तट-रेखाएँ छूटेंगी
या दीपक गुल होगा उत्सव थम जायेगा
गीतों की सब कड़ियाँ सिसकी में टूटेंगी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाने क्या होना है ?
सच है या टोना है ?
या यह भी खोना है ?
छलना की एक लड़ी !

दीपक की लौ काँपी
परदों में लहर पड़ी

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## बातें

सपनो में डूबे-से स्वर में
जब तुम कुछ भी कहती हो
मन जैसे ताज़े फूलों के झरनों में धुल जाता है
जैसे गन्धर्वों की नगरी में गीतों से
चन्दन का जादू-दरवाज़ा खुल जाता है

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१२

बातों पर बातें, ज्यों जूही के फूलों पर
जूही के फूलों की परतें जम जाती हैं
मन्त्रों में बँध जाती हैं ज्यों दोनों उम्रें
दिन की ढलती रेशम-लहरें थम जाती हैं !

गोधूली में चरवाहों की वंशी जैसे
शब्द कहीं दूर, कहीं दूर अस्त होते हैं

ख़ामोशी छाती है
एक लहर आती है
सहसा दो नीरव होंठों की सार्थकता
दो कँपते होंठों तक आने में रह जाती है !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## साँझ के बादल

ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ाती
आतीं
मन्थर चाल !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नीलम पर किरनों
की साँझी
एक न डोरी
एक न माँझी
फिर भी लाद निरन्तर लातीं
सेन्दुर और प्रवाल !

कुछ समीप की
कुछ सुदूर की
कुछ चन्दन की
कुछ कपूर की
कुछ में गेरू, कुछ में रेशम
कुछ में केवल जाल !

ये अनजान नदी की नावें
जादू के-से पाल
उड़ाती
आतीं
मन्थर चाल···

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## यह ढलता दिन

यह ढलता दिन, बिखरे बादल, बेहद डूबा-डूबा-सा जी
जैसे कोहरे में डूबी हो रंगीन गुलाबों की घाटी
अनजान दिशाओं में जाती यह श्याम घटाओं की रेखा
मटमैले आँचल पर मोती-सा
चाँद ढलक आया लेकिन –
मैंने जो आँसू पोंछ लिया, किसने जाना? किसने देखा?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नावों ने लंगर डाल दिये, घाटों पर सन्ध्या-दीप जले
मेले से सब राही लौटे, अपनी-अपनी चौपाल तले
गहना गुरिया, पंखे डलिया, टिकुली बेंदी, सेन्दुर सारी-
सोरह सिंगार सजे; सब गाँव
उनींदा हो आया लेकिन –
सुनसान कछारों से मुझको आवाज़ किसी ने सहसा दी

आवाज़ मगर वह झूठी थी, नावें झूठीं, मेले झूठे –
ये बादल शक्ल बदलते हैं, बादल उमड़े, बादल टटे
जी टूटा-सा था बहक गया, यह बादल का ताना-बाना
कुछ गाँव बसे, कुछ गाँव मिटे
बाँहों में चुपके से लेकिन –
मैंने जो आँसू पोंछ लिया, किसने देखा ? किसने जाना ?

यह बादल का ताना-बाना
बेहद डूबा-डूबा-सा जी
जैसे कोहरे में डूबी हो
रंगीन गुलाबों की घाटी

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## धुंधली नदी में

आज मैं भी नहीं अकेला हूँ
शाम है, दर्द है, उदासी है

एक खामोश साँझ-तारा है
दूर छूटा हुआ किनारा है
इन सबों से बड़ा सहारा है
एक धुँधली अथाह नदिया है
और बहकी हुई दिशा-सी है

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नाव को मुक्त छोड़ देने में
और पतवार तोड़ देने में
एक अज्ञात मोड़ लेने में
क्या अजब-सी, निराश-सी,
सुख-प्रद, एक आधारहीनता-सी है

प्यार की बात ही नहीं साथी
हर लहर साथ-साथ ले आती
प्यास ऐसी कि बुझ नहीं पाती,
और यह ज़िन्दगी किसी सुन्दर
चित्र में रंगलिखी सुरा-सी है

शाम है, दर्द है, उदासी है
आज मैं भी नहीं अकेला हूँ

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## शाम : दो मनःस्थितियाँ

एक :

शाम है, मैं उदास हूँ शायद
अजनबी लोग अभी कुछ आयें
देखिए अनछुए हुए सम्पुट
कौन मोती सहेज कर लायें
कौन जाने कि लौटती बेला
कौन से तार कहाँ छू जायें !

बात कुछ और छेड़िए तब तक
हो दवा ताकि बेकली की भी,
द्वार कुछ बन्द, कुछ खुला रखिए
ताकि आहट मिले गली की भी –

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१३

देखिए आज कौन आता है –
कौन-सी बात नयी कह जाये,
या कि बाहर से लौट जाता है
देहरी पर निशान रह जाये,
देखिए ये लहर डुबोयें, या
सिर्फ़ तटरेख छू के बह जाये,

कूल पर कुछ प्रवाल छूट जायें
या लहर सिर्फ़ फेन वाली हो
अधखिले फूल-सी विनत अंजुली
कौन जाने कि सिर्फ़ ख़ाली हो ?

दो :

वक़्त अब बीत गया बादल भी
क्या उदास रंग ले आये,
देखिए कुछ हुई है आहट-सी
कौन है ? तुम ? चलो भले आये !
अजनबी लौट चुके द्वारे से
दर्द फिर लौट कर चले आये

क्या अजब है पुकारिए जितना
अजनबी कौन भला आता है
एक है दर्द वही अपना है
लौट हर बार चला आता है

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनलिखे गीत सब उसी के हैं
अनकही बात भी उसी की है
अनउगे दिन सभी उसी के हैं
अनहुई रात भी उसी की है
जीत पहले-पहल मिली थी जो
आख़िरी मात भी उसी की है

एक-सा स्वाद छोड़ जाती है
ज़िन्दगी तृप्त भी व प्यासी भी
लोग आये गये बराबर हैं
शाम गहरा गयी, उदासी भी !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अँधेरे का फूल

रात आधी बीतने पर
डूब जाता चाँद
एक बहुत विशाल जादू-फूल खिलता है
अँधेरे का............
गली, आँगन, छत, मुँडेरों से
काँपती काली पँखुरियाँ उभरती हैं

कुछ अँधेरी, कुछ उजागर
ये कई गलियाँ
दीखती हैं उस बड़े फूल से उलझी
तुम्हारी गोर-साँवर उँगलियाँ

और मेरा मन
कभी उस फूल के अन्दर कभी वाहर
भटकता है–
उस भ्रमर-सा
फूल ने जिनको न रक्खा क़ैद
लेकिन मुक्त भी छोड़ा नहीं !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## यादों का बदन

यादों का बना हुआ बदन······

काँपते अँधेरे में
बाँहों के घेरे में
चुपके से आकर सो जाता है

छाया की रेखा-सा
बिलकुल अनदेखा-सा
साँसों में बसता है
अंग-अंग कसता है
रसभीने बन्धन में
करवट लेता है—खो जाता है

यादों का बना हुआ बदन······

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## ऑंगन-बेली

फूली है आँगन की बेल

ओसधुला एक गझिन गुच्छा
अनजाने में
कोहनी से छू गया।

पहले भी ऐसा होता था बहुधा
लेकिन
आज जगा एक अजब संवेदन
बिजली-सा नया-नया······

वह भी थी आँगन की बेल
किन्तु
महक रही आज बड़ी दूर से
आज गझिन गुच्छे फूले होंगे
धुले हुए—
चन्दन से, आँसू से, ओस से, कपूर से !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## ढीठ चाँदनी

आज-कल तमाम रात
चाँदनी जगाती है

मुँह पर दे-दे छींटे
अधखुले झरोखे से
अन्दर आ जाती है
दबे पाँव धोखे से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

माथा छू
निंदिया उचटाती है
बाहर ले जाती है
घण्टों बतियाती है
ठण्डी-ठण्डी छत पर
लिपट-लिपट जाती है
विह्वल मदमाती है
बावरिया बिना बात !

आजकल तमाम रात
चाँदनी जगाती है

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## दिन ढले की बारिश

बारिश दिन ढले की
हरियाली–भीगी, बेबस, गुमसुम
तुम हो

और,
और वही बलखाई मुद्रा
कोमल शंख वाले गले की
वही झुकी मुँदी पलक सीपी में खाता हुआ पछाड़
बेज़बान समन्दर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१४

अन्दर
एक टूटा जलयान
थकी लहरों से पूछता है पता
दूर–पीछे छूटे प्रवालद्वीप का

बाँधूगा नहीं
सिर्फ़ काँपतीं उँगलियों से छू लूँ तुम्हें
जाने कौन लहरें ले आयी हैं
जाने कौन लहरें वापस बहा ले जायेंगी

मेरी इस रेतीली वेला पर
एक और छाप छूट जायेगी
आने की, रुकने की, चलने की

इस उदास बारिश की
पास-पास चुप बैठे
गुमसुम दिन ढलने की !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## शाम, एक थकी लड़की

नींद-भरी, तरलायित, बड़री, कटावदार आँखें मूँद
शाम—
एक सफ़र में थकी हुई लड़की-सी
आयी और मेरे पास बैठ गयी :

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बैठी रही गुमसुम : धीमे
से उठी,
और कसे हुए अंग ढील
उतर गयी
गुनगुनी धूप की नदी में

साँवला सलोना जिस्म
कुछ क्षण लहरों के हिलकोरों पर
काँपा
फिर घुलने लगा–
घुलने लगा पानी की लपटों में
नीली मोमबत्ती-सा !

ओ जल-निमग्ना !
ओ लहर-विह्वल !
अपने को थामो, सँभालो–

मैं हूँ नदी तल की रेत।
अर्पित हूँ,
लेकिन किसी भी क्षण पाँवों तले से
बह जाऊँगा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अन्तहीन यात्री

बिदा देती एक दुबली बाँह-सी
यह मेड़
अँधेरे में छूटते चुपचाप
बूढ़े पेड़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ख़त्म होने को न आयेगी कभी क्या
एक उजड़ी माँग-सी यह धूल धूसर राह ?
एक दिन क्या मुझी को पी जायेगी
यह सफ़र की प्यास, अबुझ, अथाह ?

क्या यही सब साथ मेरे जायेंगे
ऊँघते क़स्बे, पुराने पुल ?
पाँव में लिपटी हुई यह धनुष-सी दुहरी नदी
बींध देगी क्या मुझे बिलकुल ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## एक छवि

छिन में धूप
छाँह छिन ओझल,
पल-पल चंचल—
गोरी दुबली, बेला उजली, जैसे बदली क्वाँर की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुबुक हठीली,
हरी पर्त में
हलकी नीली
आग लपेटे—एक कली कचनार की

दखिन पवन में
झोंके लेती डार की
लहर—वदन में

जिसने आकर
कर दी है
छवि और उजागर
मेरे छोटे फूलबसे घर, धूपधुली छत, छाँहलिपी दीवार की !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## चैत का एक दिन

सूरज में नहाये हुए
नीले कमल-सा यह चैत का नशीला दिन
मैंने बिताया नहीं
केवल गुज़ार दिया...

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१५

बेसुध तुम्हारे पास बैठे हुए
रूखी तुम्हारी मुक्त वेणी को
उँगली में बार-बार प्यार से लिपटा कर
अनबाँधे छोड़ दिया

निंदियारी आँखों से
बार-बार देखने की कोशिश की—
देखा नहीं;
बौर लदी नाजुक टहनी-सी इस देह की
हलकी गरमाई को केवल महसूस किया,
जाना नहीं :

शाम हुई :
केवल तुम्हारी रूपगन्ध में पगा मन
टूट-टूट रह-रह अलसाने लगा
मैंने कुछ नहीं किया
धीमे से तुम्हारे माथे पर झुके
रूखे हठीले एक कुन्तल को
होंठों से सँवार दिया

सुनो
सच बतलाना
क्या तुमको कभी भी
किसी ने भी
इतना उजला, कोमल, पारदर्शी प्यार दिया ?

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## फूल, सागर, सीपी

[ तुम्हारे हाथोंमें लाल फूलोंका एक
गुच्छा देखकर ]

फूल
का अधखिला अन्तस्
एक रंगीन लहराता अतृप्त सागर है–
तुम्हारी मुलायम उँगलियों के तटों से
बेबस-सा टकरा कर बार-बार अपने में
वापस लौट आता है

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुछ भीगी मणियाँ
कुछ आँसू-सा खारा फेन
किसी निर्वसना जलपरी का लज्जाभीत कम्पन
नियति के टुकड़ों-सा
छूट-छूट जाता है
मुट्ठी में तुम्हारी

क्वाँरी,
हलकी, रतनारी सीपी-से
दो पतले होंठ
आतुर हिलकोरों में रह-रह कर कँपते हैं

क्या यह उमड़ता, अमर्यादित, व्याकुल ज्वार
इन पतले होंठों में बँध कर
सिमट जायेगा
स्वाती की केवल एक बूँद-सा पकने को–
पीड़ा में गहरे डूब कर मोती रचने को–
सब कुछ टूट जाने पर भी अटूट बचने को–

कोमल तुम्हारी उँगलियों में
खिलने को आतुर
एक बँधा फूल सागर का ?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## दूसरे दिन सुबह

शेष है अब भी हवाओं में
एक हलकी लहर लेती महक
उस खिलते गुलाबी जिस्म की
प्यार से नीले पड़े रतनार होंठों की खनक
पत्तियों में शेष है अब भी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अभी तक उलझा हुआ है
साँस की हर गुंजलक में
वह लहर पर लहर लेता रूप
मृदुल कुछ-कुछ गुनगुने-से देह के स्पर्श से
अब भी घुली है सुबह की बारीक कच्ची धूप !

वह तुम्हें पाने न पाने की अजब-सी टीस
रीती नहीं—रीती नहीं
शाम में घुलती हुई वह फूल-सी दुपहर
बीत कर भी अभी बीती नहीं—बीती नहीं

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## अंजुरी भर धूप

अँजुरी भर धूप-सा
मुझे पी लो !
कण-कण
मुझे जी लो !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जितना हुआ हूँ आज तक मैं किसी का भी–

बादल नहायी घाटियों का,
पगडण्डी का,
अलसायी शामों का,
जिन्हें नहीं लेता कभी उन भूले नामों का,

जिनको बहुत बेबसी में पुकारा है
जिनके आगे मेरा सारा अहम् हारा है,
गजरे-सी बाँहों का
रंग रचे फूलों का,
बौराये सागर के ज्वार-धुले कूलों का,
हरियाली छाँहों का
अपने घर जानेवाली प्यारी राहों का–

जितना इन सब का हूँ
उतना कुल मिला कर भी थोड़ा पड़ेगा
मैं जितना तुम्हारा हूँ

जी लो
मुझे कण-कण
अँजुरी भर
पी लो !

■

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

## घाटी का बादल

जाने कब, किस गुहानीड़ से उड़कर गुपचुप
मेघधूम का योजन विस्तृत पक्षी सहसा
प्रकट हो गया घाटी सुदूर छोर पर
गहरे भूरे, मीलों लम्बे डैने खोले......

प्रातधूप की ज़रतारी ओढ़नी लपेटे
अभी-अभी जागी
ख़ुमार से भरी
नितान्त कुमारी घाटी
इस कामातुर मेघधूम के
औचक आलिंगन में पिस कर
रतिश्रान्ता-सी मलिन हो गयी !

थका हुआ बादल
पश्चिम के श्याम निरावृत शिखरों पर
शीतल कपोल धर
क्षण-भर गहरी नींद सो गया ;

धीरे-धीरे
मूर्च्छित घाटी में जैसे कुछ साँसें लौटीं
अलस झकोरे, देवदारु में, चीड़कुंज में
गन्ध लदे-मादक भीगे-से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

१६

मेघधूम ने करवट ली–
अँगड़ाई में ज्यों
सौ-सौ गहरे भूरे डैने आगे पसरे,
उड़े,
खड़े पर्वत शिखरों से टकरा कर
मड़राये
मुड़े–
कटानों में
दर्रों में भटके
फिर ढालों पर धीमे-धीमे हाँफ-हाँफ कर चढ़ने लगे
बटोही-जैसे !

जहाँ अभी घाटी थी लहरधारियों वाली
हरे खेत थे
लाल छतों वाले छोटे पर्वती गाँव थे
वहाँ नहीं है कुछ भी अब
वह जादू था
वह इन्द्रजाल था
लुप्त हो गया !
सच है केवल मेघधूम यह
ढालों से टकराते क्षीर-महासागर-सा
फेंक रहा है उजला फेना

लाल छतों वाले छोटे पर्वती गाँव
या हरे खेत
या लहरधारियों वाली घाटी
ये थे केवल मूँगा मछली सीप सिवारें
जो धाराओं की उछाल में ऊपर आये

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुछ क्षण ऊपर तैरे फिर जलमग्न हो गये !

नीचे मेघधूम का सूना-सूना सागर
ऊपर केवल नभ
गुमसुम-सा, उदासीन-सा
और बीच में निराधार-सा विना नींव का पूरा पर्वत !

कैसे अचल खड़ा है
क्या यह भी जादू है ?

ढालों पर चुपचाप खड़े हैं
बाँझों के छितरे-छितरे वन !
उलटी हुई पुतलियों-जैसे
बाँझों के नोकीले पत्ते
उलटे औ' फिर
श्वेत हो गये !

नीचे के कंटक झाड़ों में अटक-अटक कर
ऊपर चढ़ता जाता है अजगर-सा बादल
तने, डालियाँ, पत्ते पहले भूरे पड़ते,
लगता जैसे पीछे हटते
धीरे-धीरे पुँछी लकीरों-से मिट जाते !

कुछ भी नहीं रहा
उत्तुंग शिखर वाला गरवीला पर्वत
रंगों के कच्चे धब्बे-सा धुला, बह गया—
घाटी, गाँव, खेत, वन, झरने
सकल सृष्टि ज्यों धुँआ-धुँआ अणुओं में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विश्रृंखल विभक्त हो बिखर गयी है !
शेष बचा हूँ केवल मैं
या मेरे चारों ओर दूर तक फैला हुआ सफ़ेद अँधेरा

बाक़ी सब कुछ नष्ट हो गया
गाँव, जहाँ पर मेरा घर था
पगडण्डी, जिन पर चल मैं शिखरों तक पहुँचा
जंगल, जिसमें बड़ी साँझ तक भटका खोया
झरने, जिनमें थके धूल से सने पाँव धो
थकन मिटायी,

सब कुछ—सब कुछ—नष्ट हो गया

शेष बचा हूँ मैं
या मुझको घेरे उजली धूम्र-शून्यता ।

धीरे-धीरे हार रहा हूँ,
इस ऊँचाई पर चढ़कर ही
जान सका हूँ—हम सब
क्या हैं ?
सिर्फ़,
बहुत ऊँचे पहाड़ पर चढ़ते बौने ।

बौना—जिसको केवल दो पग दीख रहा है
दो पग आगे
दो पग पीछे
दो पग ऊपर
दो पग नीचे
दो पग की ही केवल जिसकी ज्ञान-परिधि है !

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कहाँ पड़ेगा ग़लत क़दम
औ' मीलों लम्बी घाटी मुझको खा जायेगी !

यह अथाह शून्यता
डरा मैं
हाथों से टटोल कर किसको खोज रहा हूँ
यह है पत्थर, ये हैं जड़ें
किन्तु यह क्या है ?
अँधियारे में नरम परस-सा
किसका हाथ छू गया मुझको ?

''मैं हूँ एक दूसरा बौना
पगडण्डी से ज़रा अलग हट
साथ तुम्हारे मैं चलता आया हूँ अब तक ।
हारो मत, साहस मत छोड़ो
मैं भी हूँ बौना, वामन हूँ
किन्तु तीन पग माँगे हैं मैंने धरती से
दो पग तुमको दीख रहा है
उसे पार कर बढ़ो
तीसरा पग तो मुझमें सार्थक होगा
मुझ पर छोड़ो,

हर मनुष्य बौना है लेकिन
मैं बौनों में बौना ही बनकर रहता हूँ
हारो मत, साहस मत छोड़ो
इससे भी अथाह शून्य में
बौनों ने ही तीन पगों में धरती नापी ।''

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पतला पड़ने लगा
दृष्टिरोधी वह परदा
सहसा मुखर हो उठी वह निश्शब्द शून्यता

दीखे नहीं,
मगर चीड़ों ने सन-सन कर मदमाती गन्धों वाले
पवन सँदेसे भेजे
झुरमुट में सहमी चिड़ियों ने
दबे कण्ठ से मुझे पुकारा
दूर कहीं सुन पड़ा पहाड़ी गाने का स्वर।

थोड़ा-सा विश्वास लौट कर आया मुझमें
दीख नहीं पड़ते हैं
पर इस गहन कुहा में
कितने ही जंगली रास्ते आते-जाते
पथिकों से अब भी सजीव हैं
अपराजित है जिनमें चलने की आकांक्षा।
दीख नहीं पड़ता है सूरज
पर दो शिखरों बीच झर रही
दिव्य ज्योति-सी धूप धुँईली।

नदियाँ नीचे चमक उठीं रूपाडोरी-सी
और दूधिया शीशे में से
झलक उठे हैं वृक्ष बाँझ के, पुल लोहे के,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धीरे-धीरे परतें कटने लगीं धूम की
यहाँ वहाँ पर
पिघले सोने के पानी-सी
धूप टपकने लगी
गाँव खिल गये फूल-से

बादल जैसे आया वैसे लौट गया है

केवल कुछ बादल के पीछे छूटे टुकड़े
छायादार झाड़ियों में विश्राम कर रहे
जैसे धौरी उजली गायें

एक अकेला चंचल बादल
चाँदी के हिरने-सा घाटी में चरता है !

9565

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

२९.६१५१
धो ६५२४

## कवि-परिचय

[ जन्म : २५ सितम्बर १९२६ ]

प्रयाग विश्वविद्यालयसे एम.ए., पी-एच्.डी.; पहले वहीं हिन्दी प्राध्यापक, अब 'धर्मयुग'-सम्पादक ।

अन्य कृतियाँ : ठण्डा लोहा (कविताएँ), गुनाहोंका देवता (उपन्यास), अन्धा युग (गीतिनाट्य), सूरजका सातवाँ घोड़ा (उपन्यास), चाँद और टूटे हुए लोग (कहानियाँ), ठेलेपर हिमालय (निबन्ध), नदी प्यासी थी (नाटक), मानव मूल्य और साहित्य (निबन्ध), ऑस्करवाइल्डकी कहानियाँ (अनुवाद), कनुप्रिया (काव्य), देशान्तर (समकालीन विदेशी काव्य) ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

# भारतीय ज्ञानपीठ

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक-साहित्यका निर्माण

•

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

•

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी—५

भारती की सन् ’५१ से ’५८ तक की कविताएँ • भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन